

## जैव विविधता एवं जैविक कृषि में भारत की श्रेष्ठता (एक विश्लेषण)

जैन लता

अर्थशास्त्र विभाग, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर, भारत  
latajain310@gmail.com

जीवन की विविधता (जैव-विविधता) पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व और स्थायित्व को मजबूती प्रदान करती है, समृद्ध जैव-विविधता अच्छा स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक विकास, आजीविका सुरक्षा और जलवायु की परिस्थितियों को सामान्य बनाए रखने का आधार है भारत एक प्राकृतिक संसाधन सम्पन्न देश है प्राचीनकाल से ही भारत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक एवं प्रतिबद्ध रहा है जैव-विविधता प्राकृतिक संसाधनों का एक प्रमुख अंग है।

जैव-विविधता भाब्द का सबसे पहले प्रयोग वाल्टर जी रासेन ने 1986 में किया था तब से यह शब्द जीव-विज्ञानियों एवं पर्यावरणविदों के लिए एक महत्त्वपूर्ण शब्द बन गया है, जैव-विविधता जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है। जैव यानी जीवन तथा विविधता यानी भिन्नता अर्थात् इस पृथ्वी पर पाए जाने वाले जीवन के विभिन्न रूप चाहे वे पेड़-पौधे हों या जीव-जन्तु, जीवाणु शैवाल, एक कोशकीय जीवों से फूल वाले पौधे तथा सभी जन्तुओं यानी जीवाणुओं से लेकर ढेल और हाथी तक सभी जैव-विविधता के अंग हैं अर्थात् जीवन के विभिन्न प्रकार जो इस पृथ्वी पर हैं वे सब जैव-विविधता में शामिल हैं।

### जैव विविधता के रूप

किसी परिक्षेत्र या पारितंत्र विशेष में प्राप्त जीवधारियों (जीव-जन्तु/पेड़-पौधे) की प्रजातियाँ, पारितंत्रीय एवं आनुवंशिका विविधता को जैव-विविधता की संज्ञा दी गई है प्रजातीय विविधता किसी चिन्हित इकाई में प्राप्त समस्त जीवधारियों/जीव जंतुओं एवं वनस्पतियों, पुष्पीय पौधों, अपुष्पीय पौधों, बैक्टीरिया, वायरस, इत्यादि की समस्त प्रजातियों की उपस्थिति का द्योतक है, जैव-विविधता विभिन्न जीव धारियों की आनुवंशिक संरचना में विविधता का सूचक है जैव-विविधता के कुछ रूप इस प्रकार हैं – अल्फा जैव-विविधता के अन्तर्गत वे सभी जीव-जन्तु एवं वनस्पतियाँ आती हैं, जो किसी निश्चित/विशेष स्थान/आवास पर पाई जाती हैं। बीटा विविधता के अन्तर्गत किसी विशेष क्षेत्र के विभिन्न आवासों या स्थानों पर पाए जाने वाले सभी जीव जन्तु एवं वनस्पतियों का विवरण दिया जाता है गामा विविधता के अन्तर्गत एक भौगोलिक क्षेत्र के विभिन्न आवासों में पाए जाने वाले समस्त जीवधारियों का विवरण दिया जाता है जैव-विविधता के अन्य आयामों में प्रमुख हैं— कृषि जैव-विविधता, स्थानिक जैव विविधता, समावेष्टित जैव विविधता एवं सूक्ष्म जैवीय विविधता इत्यादि।

### भारत और जैव-विविधता

भारत जैव-विविधता और इससे सम्बन्धित न केवल पारंपरिक ज्ञान से सम्पन्न है, बल्कि हमारा देश जैव-विविधता के संरक्षण के प्रति जागरूकता में महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभा रहा है। अक्टूबर 2012 में हमने जैव-विविधता कन्वेंशन के पक्षकारों (सीओपी-11) के सम्मेलन की मेजबानी भी की जैव-विविधता कन्वेंशन के पक्षकारों में 192 देश सदस्य हैं यह कन्वेंशन राष्ट्रों की उनके अपने-अपने जैविक संसाधनों पर सम्प्रभुता की पुष्टि करने के साथ-साथ तीन मुख्य लक्ष्य भी निर्धारित करता है ये हैं—जैव-विविधता का संरक्षण इसके घटकों का सतत उपयोग तथा आनुवंशिक संसाधनों के उपयोग से मिलने वाले लाभों का उचित और समान रूप से वितरण। भारत जैव-विविधता के धरोहर की सम्पन्नता के लिए अग्रणी रहा है हमारा देश दुनिया

के उन 17 देशों में से एक है जिन्हें बृहद्-वैविध्य सम्पन्न देश का दर्जा हासिल है वि व के 34 में से 4 हॉट-स्पॉट भारत में है यहाँ की जैव-विविधता का लगभग 50 प्रतिशत भाग स्थानिक है अर्थात् केवल भारतीय भू-भाग में ही पाई जाती है यहाँ पर जैव-विविधता के संरक्षण के लिए प्रयास किए जाते रहे हैं यहाँ तक कि हमारे संविधान के अनुच्छेद 48(क) (छ) में पर्यावरण संरक्षण के निर्देश दिए गए हैं इसके अतिरिक्त भारत में इस बारे में स्पष्ट नीतियाँ, कार्यक्रम एवं परियोजनाएँ हैं, जो जैव-विविधता के संरक्षण में सहायक हैं इनमें से वन संरक्षण अधिनियम, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, जैव विविधता अधिनियम प्रमुख हैं।

भारत अपनी जैव-विविधता की समृद्ध विरासत के लिए प्रसिद्ध है भारत के पास पूरे विश्व की भूमि का 2.4 प्रतिशत हिस्सा है लेकिन यह क्षेत्र कुल जैव-विविधता के लगभग 7 से 8 प्रतिशत हिस्से को आश्रय प्रदान करता है अभी तक भारत में लगभग 46,000 वनस्पति प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है जिनमें से लगभग 1,000 फल-फूल वाले पौधे, 2,500 ब्रायोफाइट, 1000 प्रकार के पर्णांग (फर्न), 1,600 प्रकार के भौवाक (लाइकेन), 2,300 प्रकार के शैवाल तथा 12,500 प्रकार के फफूँद पाए जाते हैं इन आँकड़ों से पता चलता है कि पूरे विश्व के 7 प्रतिशत बिना फूल वाली वनस्पतियाँ व 6 प्रतिशत फल-फूल वाले पौधे भारत में पाए जाते हैं।

पर्यावरण एवं वन की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 77,000 जन्तुओं की प्रजातियाँ पाई जाती हैं इनमें 372 स्तनधारी प्रजातियाँ, 1228 प्रकार के पक्षी 428 प्रकार के सरीसृप तथा 204 प्रकार के उभयचर, 2546 प्रकार की मछलियाँ तथा 5,000 से ज्यादा प्रावारचूर्ण यानी मोलस्क एवं 50,000 से ज्यादा कीटों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

भारत में उगाई जाने वाली विभिन्न फसलों में भी असीम जैव-विविधता देखने को मिलती है हमारे देश में जो फसलें उगाई जाती हैं उनमें से 66 प्रजातियाँ व उनके जंगली सम्बन्धियों की लगभग 320 प्रजातियाँ का जन्म-स्थान भारत ही है।



### जैविक खेती और भारत

जैविक खेती कृषि की वह पद्धति है, जिसमें पर्यावरण को स्वच्छ एवं प्राकृतिक संतुलन को कायम रखते हुए भूमि, जल एवं वायु को प्रदूषित

किए बिना दीर्घकालीन व स्थिर उत्पादन प्राप्त किया है। इस पद्धति में रासायनिक खेती की अपेक्षा सस्ती, स्वावलंबी एवं स्थाई हैं। मिट्टी को एक जीवित माध्यम माना गया है यह मात्र भौतिक माध्यम नहीं है। जैविक खेती से लक्षित उत्पादन प्राप्ति संभव है।

कार्बनिक खादों का अधिकाधिक उत्पादन एवं उनका उपयोग जैसे गोबर की खाद, कम्पोस्ट खाद, जलीय खरपतवारों की कम्पोस्ट, हरी खाद वर्मीकम्पोस्ट नीलहरित शैवाल, तालाबों की मिट्टी का उपयोग जैविक खेती के लिए आवश्यक है। जीवाणु युक्त कल्चर जैसे – एजोला एजोटोबैक्टर, राइजोबियम, एजोस्पाइरिलम, फास्फोरस घोलक सूक्ष्मजीवी (पी. एस.एम) माइक्रोराइजा आदि का उपयोग भी जैविक खेती में शामिल है।

जैविक खेती में जहरीली कीटनाशक औषधियों का उपयोग प्रतिबंधित है क्योंकि जब भी कीड़ों को मारने के लिए इनका उपयोग किया जाता है तो यह मात्र लक्षित कीड़ों को ही नहीं मारते बल्कि लाभदायक कीड़ों को भी मार देते हैं, जिससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है एवं इन जहरीले रसायनों के अवशेष खाद्य पदार्थों में जाकर प्राणियों के स्वास्थ्य को बिगाड़ते हैं इसलिए फसलों पर लगने वाली कीट व्याधियों के नियंत्रण के लिए एकीकृत उपाय अपनाना आवश्यक है, जो प्रकृति के अनुकूल होते हैं एवं लाभदायक जीवों की हानि भी नहीं होती है।

### जैविक खेती अपनाने की आवश्यकता

देश व दुनिया से ऐसे तमाम उदाहरण सामने आ रहे हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि जैविक खेती से पर्यावरण सुरक्षा, खाद्य सम्पन्नता तथा खाद्यान्न सुरक्षा प्राप्ति के साथ ही लघु व सीमांत किसानों की आर्थिक स्थिति सुधरी है। अतः हमें ध्यान इस ओर देना है कि गांव में उपलब्ध संसाधनों का ही बेहतर उपयोग करते हुए परम्परागत उन्नत बीजों, कम्पोस्ट खाद व हानिकारक कीड़े दूर रखने के लिए स्थानीय उपाय करते हुए जहरीले उत्पादों से दूरी बनाएं ताकि केचुए, तितली, मधुमक्खी, मेंढक एवं पक्षियों जैसे किसान के मित्रों की भूमिका उपयोगी साबित हो सके और हमें टिकाऊ खाद्यान्न सुरक्षा हासिल हो सके।

### जैविक खेती के लाभ

- जैविक खेती पद्धति से मनुष्य, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, भूमि, जल, वायु तथा विभिन्न जैविक व अजैविक घटकों के बीच संतुलन बना रहता है।
- यह पर्यावरण हितैषी होने के साथ ही मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है।
- यह आधुनिक व रासायनिक कृषि की अपेक्षा सस्ती सरल व स्थान विशेष के अनुकूल है।
- इसमें किसान की बाजार पर निर्भरता कम होने से वह स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देने में सहायक है। इससे गांव से शहरों की ओर पलायन को कम किया जा सकता है।
- कम लागत में अधिक उपज प्राप्त होती है और किसान स्वावलंबी बनता है।
- कचरे का उचित प्रबंधन होता है जिससे स्वास्थ्य के प्रति प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता।
- लाभदायक जीवों का संरक्षण होता है तथा प्राकृतिक संतुलन बना रहता है।
- भूमि में जलधारण क्षमता बढ़ती है जिससे अल्पवर्षा एवं अन्य विपरीत परिस्थितियों के प्रति भूमि सहनशील बनती है।

- खेत और उसके आसपास के क्षेत्रों में प्राकृतिक जैवविविधता की सुरक्षा होती है।
- सुरक्षित और विविध प्रकार के खाद्य पदार्थों का उत्पादन सम्भव होता है।
- उत्पाद में स्वाद व पौष्टिकता की वृद्धि के साथ ही उत्पादकता में वृद्धि होती है।
- मृदा की दीर्घकालीन उर्वरता में वृद्धि होती है।
- स्थानीय कृषि क्रियाओं एवं ऊर्जा नवीनीकरण स्रोतों का उपयोग होने के साथ ही रोजगार का सृजन होता है।

### कार्बनिक पदार्थों की पर्याप्त उपलब्धता

जैविक खेती के लिए आवश्यक है कि जैविक पदार्थों की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में हो। यहां सोचने का विषय यह है कि क्या देश में जैविक पदार्थों की इतनी मात्रा में उपलब्धता है या होगी कि कार्बनिक खेती से किसान अपने उत्पाद लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। एक अध्ययन के अनुसार देश में प्रतिवर्ष 280 मिलियन टन गोबर, 273 मिलियन टन फसल अवशेष, 285 मिलियन टन ग्रामीण कचरा तथा 6351 मिलियन टन गंदा पानी, औद्योगिक खराब पानी 66 मिलियन टन, जंगलों में पत्तियां 19 मिलियन टन, शहरी कूड़ा 15 मिलियन टन, तथा गन्ने की मैली 03 मि. टन प्राप्त होता है। (तालिका) उर्पयुक्त जैविक एवं औद्योगिक पदार्थों से 19.419 मि. टन नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश के रूप में पोषक तत्वों की पूर्ति प्रति वर्ष की जा सकती है। इसके अलावा लगभग 25–26 मि. हे. क्षेत्र में दलहनी फसलें उगाई जाती हैं, जो कि अपनी जड़ ग्रन्थियों द्वारा एकत्रित की गई नत्रजन का कुछ भाग अगली फसल के लिए छोड़ देती है। यदि प्रति हेक्टेयर औसतन 20–25 किग्रा नत्रजन अवशेष के रूप में इन फसलों से मिलने का अनुमान लगाया जाए तो 0.5–0.6 मि. टन नत्रजन का लाभ प्रति वर्ष प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही दलहनी चारे की फसलों से भी नत्रजन का लाभ मिलता है। इस प्रकार जैविक पदार्थों के प्रयोग से भूमि के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में सुधार होता है। इसके अलावा इसके उपयोग करने से मिट्टी में उपलब्ध जीवाणुओं को नई शक्ति मिलती है।



### जैव-विविधता संरक्षण के लिए अंतर-राष्ट्रीय प्रयास

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित 22 मई को जैव-विविधता दिवस समूचे विश्व में प्रतिवर्ष मनाया जाता है इससे जैव-विविधता के संरक्षण के प्रति जागरूकता आई है, संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2010 को जैव-विविधता वर्ष घोषित करके प्रकृति के नैसर्गिक संतुलन को बनाए रखने के लिए आह्वान किया था।

तालिका 1  
विभिन्न कार्बनिक स्रोतों द्वारा उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा

कार्बनिक स्रोत	उपलब्धता मि. टन	कुल पोषक तत्व (मि. टन)			कुल
		नत्रजन	फॉस्फोरस	पोटाश	
फसल अवशेष	273	1.28	1.97	3.91	7.16
पशुओं का गोबर	280	2.81	2.0	2.07	6.88
ग्रामीण कचरा	285	1.43	0.86	1.42	3.71
जंगलों में पत्तियाँ	19	0.10	0.04	0.10	0.24
शहरी कूड़ा	15	0.23	0.15	0.23	0.61
गन्ने की मैली (प्रेसमड)	03	0.03	0.079	0.055	0.164
गंदा पानी (मि. क्यू. मी.)	6351	0.32	0.14	0.19	0.65
औद्योगिक खराब पानी (मि. क्यू.मी.)	66	0.003	0.001	0.001	0.005
<b>कुल</b>	—	6.203	5.20	7.976	19.417

स्रोत – बी.पी. ध्यानी एवं साथी द्वारा सम्पादित खरीफ फसलों हेतु दक्ष पोषक तत्व प्रबंधन

वर्ष 2011-20 को संयुक्त राष्ट्र जैव-विविधता दशक घोषित किया गया है अलग-अलग वर्षों के लिए जैव-विविधता की थीम इस प्रकार रही हैं—

2002 – वनों की जैव-विविधता को समर्पित

2003 – जैव-विविधता एवं गरीबी उन्मूलन-सतत विकास की चुनौतियाँ

2004 – जैव-विविधता : सबके लिए भोजन, जल एवं स्वास्थ्य

2005 – जैव-विविधता : हमारी बदलती दुनिया के लिए जीवन बीमा

2006 – शुष्क भूमि में जैव-विविधता संरक्षण

2007 – जैव-विविधता एवं जलवायु परिवर्तन

2008 – जैव-विविधता एवं कृषि

2009 – आक्रामक बाह्य प्रजातियाँ

2010 – जैव-विविधता, विकास एवं गरीबी उन्मूलन

2011 – जैव-विविधता एवं वन

2012 – समुद्री जैव-विविधता

वर्तमान में उपरोक्त सभी विषयों पर फोकस किया जा रहा है।



### जैविक खेती सम्बंधी अनावश्यक भ्रम

आज के समय में सभी जागरूक किसान जानते हैं कि अत्याधिक रसायनों के प्रयोग से उत्पादित फसलों की गुणवत्ता में कमी आने के साथ ही टिकाऊपन घट रहा है, किन्तु आधुनिक खेती का छोड़कर जैविक खेती अपनाने को बहुत कम किसान तैयार हैं, क्योंकि उनको भ्रम है कि कहीं प्रति हेक्टेयर उनका उत्पादन इतना कम ना हो जाए कि लागत भी प्राप्त न हो, दूसरे जैविक खेती करने के लिए जैविक खादों की आपूर्ति कहां से होगी? लेकिन कई किसान सीमित संसाधन

के बावजूद परम्परागत खेती से हटकर अच्छी जैविक खेती करते हैं। वे अपने खेतों में खाद्यान्न फसलों में गेहूँ, चावल, जौ और मक्का, दलहनी फसलों में उड़द, मूंग, चना, राजमा फलों में केला, आम, पपीता, अमरुद, अनार तथा सब्जियों आदि की खेती करने के साथ-साथ देशी औषधियों जैसे तुलसी, एलोवेरा, पत्थर चूर, हल्दी इत्यादि भी उगाते हैं। वे अपने दुधारू पशुओं के गोबर, बगीचों के पत्तों और सब्जियों के अपशिष्ट से बनी जैविक खाद-नाडेप कम्पोस्ट, केंचुआ खाद आदि स्वयं तैयार करते हैं तथा गौमूत्र, लहसुन, तम्बाकू, नीम आदि से कीटनाशक तैयार कर उपयोग करने के साथ-साथ दूसरों को भी प्रेरित करते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनके परिवारों को रसायन रहित पौष्टिक अनाज, सब्जियाँ, दालें, तिलहन, फल, गुड़, घी, दूध, औषधियाँ आदि सब खेतों से प्राप्त होती हैं। इसके अलावा हर वर्ष कुछ उत्पाद विक्रय से भी काफी आमदनी हो जाती है। इसलिए जैविक खेती घाटे की खेती नहीं है और न ही रहेगी, वरन इसे लगान से करने की आवश्यकता है।

### जैव-विविधता का संरक्षण

पूरी दुनिया यह समझ चुकी है कि जैव-विविधता का संरक्षण वर्तमान ही नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के अस्तित्व के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है।

जैव-विविधता को होने वाली क्षति का मुख्य कारण मानवीय कार्यकलाप हैं, जिनके कारण पर्यावास विखण्डन, अवक्रमण एवं क्षति, आनुवांशिक विविधता में संकुचन, विजातीय प्रजातियों का अतिक्रमण, संसाधनों का अति-दोहन, प्रदूषण आदि की घटनाएं होती हैं जैव-विविधता को होने वाली क्षति के परिणामस्वरूप प्राकृतिक सम्पदा को क्षति पहुँचती है।

असंतुलित विकास जैव-विविधता का दुश्मन है छोटे-बड़े तालाबों को पाटने से जलीय विविधता खतरे में पड़ जाती है जल प्रदूषण हो या वायु प्रदूषण इनके बढ़ने से जैव-विविधता घटती जाती है नदियों एवं झीलों में प्रदूषण बढ़ने से वहाँ रह रहे संवेदी किस्म के प्राणी और वनस्पतियाँ विलुप्त हो जाती हैं केवल वे ही जीव बचते हैं, जिनमें प्रदूषण को सहने की क्षमता ज्यादा होती है, ऐसा ही वायु-प्रदूषण के साथ होता है मिट्टी के प्रदूषण से जमीन के अन्दर रहने वाले केंचुए, बैक्टीरिया, अन्य प्रकार के कीट और शैवालों की संख्या एवं गुणात्मकता दोनों घट जाती हैं जैव-विविधता पर मँडराते खतरे के कई कारण उस भूमि या स्थान का कम होना है, जहाँ ये वनस्पतियाँ उगती हैं अथवा ये जीव-जन्तु रहते हैं।

तालिका 2  
जैविक खेती को प्रभावित करने वाले घटकों की जानकारी

क्र.	जैविक खेती को प्रभावित करने वाला घटक	जैविक खेती करने वाले कृषक वर्ग		
		निम्न जैविक अंगीकारक कुल कृषक 28	मध्यम जैविक अंगीकारक कुल कृषक 328	उच्च जैविक अंगीकारक कुल कृषक 44
1	पशुधन की कम संख्या	20.00 (70.12)	(71.42) 6.00	230.00 (13.63)
2	जनकारी का अभाव	3.00 (75.30)	(10.71) 27.00	247.00 (61.36)
3	जैविक खेती की जटिल प्रक्रिया	28.00 (100.00)	(100.00) 44.00	328.00 (100.00)
4	जोत का आकार अधिक होना	6.00 (12.19)	(21.42) 0.00	4.00 (0.00)
5	पर्यावरण जागरूकता का अभाव	16.00 (75.30)	(54.14) 33.00	247.00 (75.00)

स्रोत :- सर्वेक्षण पर आधारित (म.प्र.)

इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ नैचर (आईयूसीएन) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि वि.व. में जीव-जंतुओं की 47,667 प्रजातियों में से एक तिहाई से अधिक प्रजातियाँ यानी 17,291 प्रजातियों पर विलुप्त होने का खतरा मँडरा रहा है उनके द्वारा जारी की गई रेड लिस्ट के अनुसार, स्तनधारी जीव-प्रजातियों की 21 प्रतिशत प्रजातियाँ, उभयचर जीवों की 30 प्रतिशत प्रजातियाँ, पक्षियों की 12 प्रतिशत प्रजातियाँ विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही हैं वनस्पतियों की 70 प्रतिशत प्रजातियों के अलावा ताजे पानी में रहने वाले सरीसृपों की 37 प्रतिशत प्रजातियों और 1147 प्रकार की मछलियों पर भी विलुप्त होने का खतरा मँडरा रहा है इसी प्रकार भारत में मिलने वाले अनेक जीव जैसे गिद्ध, बाघ आदि भी विलुप्ति के कगार पर हैं।

**निष्कर्ष :** 26 दिसंबर से 31 दिसंबर 2006 को मणिपुर और सिक्किम में आयोजित 14वीं बाल विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन समारोह में जैव-विविधता की महत्ता के बारे में विचार व्यक्त करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था कि "जैव-विविधता से परिपूर्ण हमारी धरती सदैव रचनात्मकता का संदेश देती है और इस रचनात्मकता से मानव नई खोजों, अविष्कारों और अनुसंधानों द्वारा विकास के मार्ग पर बढ़ता जाता है, इस प्रकार धरती की सुन्दर जैव-विविधता का मानवीय विकास से गहरा संबंध है, अतः

जैव-विविधता संरक्षण से मानव न केवल प्रकृति का सम्मान करता है वरन् वह स्वयं भी अपने भविष्य को सँवारता है।"

जैव-विविधता के कारण धरती मनोहर और सुन्दर बनी हुई है, एक अनुमान के अनुसार, पृथ्वी पर 55 लाख प्रजातियों में से अब तक लगभग 17.5 लाख प्रजातियों को ही पहचान जा सका है, जिनमें से अधिकतर कीट हैं मानव इतिहास में किसी-न-किसी समय लगभग 80,000 खाद्य वनस्पतियों का प्रयोग किया गया है, जिनमें से वृहत स्तर पर लगभग 1500 ही उगाई गई हैं, आज केवल 10 से 20 प्रजातियों से ही विश्व की 80-90 प्रतिशत आवश्यकता पूरी हो रही है, लगभग 67-70 प्रतिशत आधुनिक औषधियाँ प्राकृतिक उत्पादों से बनाई जाती हैं, लकड़ी, ईंधन, बाँस, घास, चारा, कागज, कॉस्मेटिक्स, परिधान और आवास संबंधी सामग्री कुछ अन्य उत्पाद हैं, जिनके बिना हमारा जीवन कठिन हो जाता है जैव-विविधता से पारिस्थितिकी संतुलन भी बना रहता है।

अतः जैव-विविधता अपने आप में एक जीवन बीमा के समान है, विश्व में जैव-विविधता का वार्षिक योगदान लगभग 330 खरब डॉलर है।

(Received 11<sup>th</sup> January 2019, accepted 26<sup>th</sup> January 2019)